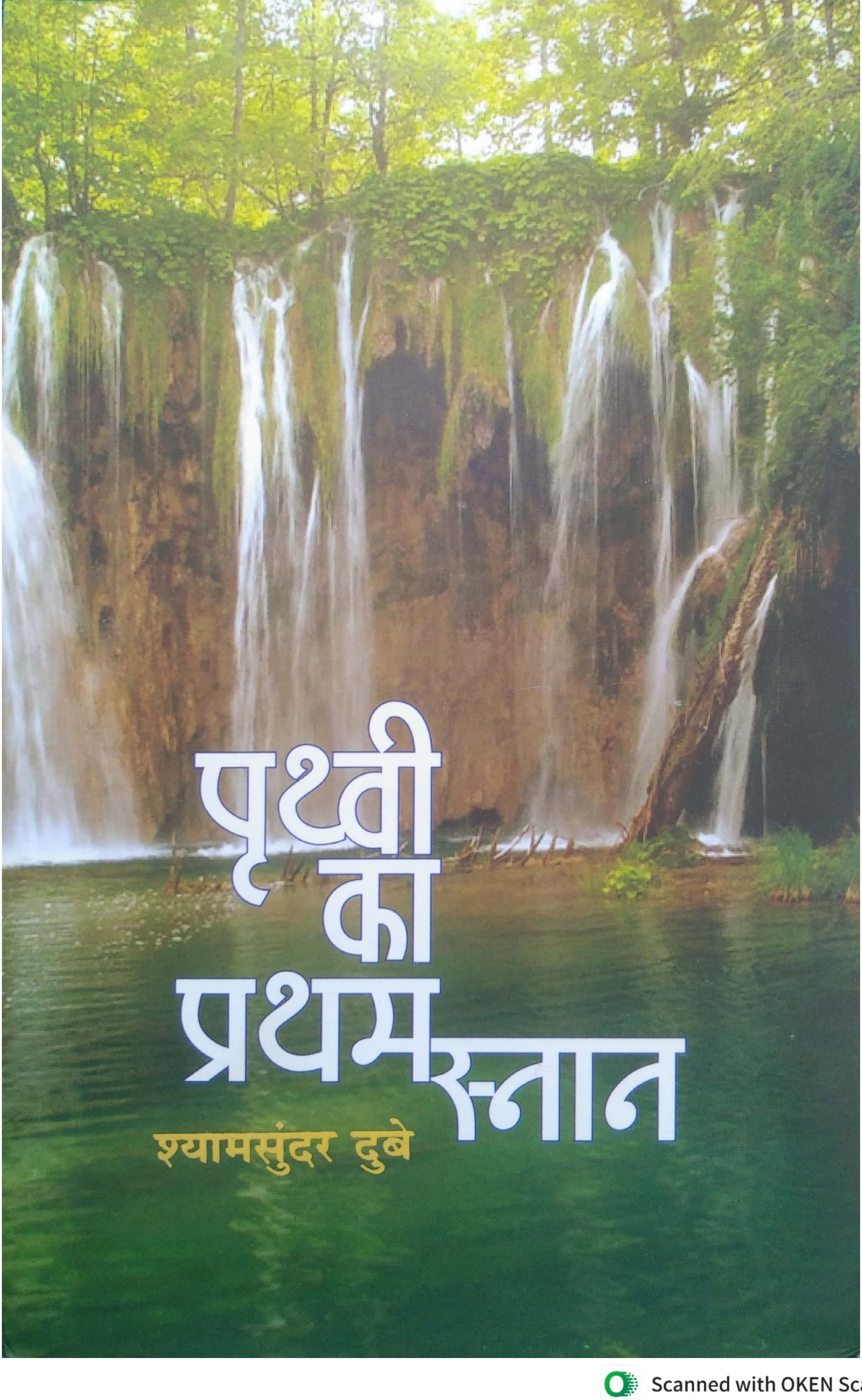

पृथ्वी का प्रथम स्नान

श्यामसुंदर दुबे

Scanned with OKEN Scanner

प्रकाशक
मेधा बुक्स
एक्स-11, नवीन शाहदरा
दिल्ली-110 032
98910 22477
medhabooks@gmail.com

मूल्य
200.00

© श्यामसुंदर दुबे

प्रथम संस्करण
सन् 2016

आवरण
ओजस्वी ग्राफिक्स

मुद्रक
अजय प्रिंटर्स
दिल्ली- 110032

PRITHVI KA
PRATHAM SNAN
poems by
ShyamSunder Dubey

ISBN 978-81-8166-545-4

Scanned with OKEN Scanner

कविता क्रम

खंड एक : सृष्टि संभव

पृथ्वी

गुस्सैल स्त्री 9
लता मंगेशकर की तरह 11
धरती का पता 13
धरती की सुख-नींद 15
धरती दिया बाती है 17

जल

जल में कुंभ 19
पानी में थी प्यास 21
पानी की लय न टूटने पाए 23
बर्फ़ से पूछना पानी का पता 25
पानी की अंतरंगता में 27

आग

आग : प्रेमगीत है 28
आग : जीवन की तलाश 30
आग : जो जलाती है सब कुछ 32
आग बहुत जज़्बाती 34
आरी-सी आग 36

Scanned with OKEN Scanner

हवा

डिब्बी भर हवा 38
हवा के हैं लाख भरम 40
यह दुनिया एक आंगन है 42
स्वप्न का यथार्थ 44
आतंक में गीत-गोविंद 47

आकाश

बचता है केवल शून्य 49
खोलता देह-सीमांतों को 51
बचपन जैसा सभी जगह 53
एक अदृश्य रंगरेजा 55
पिता के अनकहे दुख 57

देह

अग्निसंभवा 58
देह-फूल 60
अचरज भरी देह 62
देह बड़ी प्यारी है 64
झीनी-झीनी बीनी चदरिया 66

प्रेम

एक मात्र आदिम प्यास 68
ज्यौं-ज्यौं डूबे श्याम रंग 70
अगर कहीं पर मिले तुम्हें वह 72
इस सूचना भरे समय में 74
अनंत तरजुमे 76

Scanned with OKEN Scanner

खंड दो : दृश्य-परिदृश्य

मौत	81
दो हौंठों के बीच कविता	82
जीवन की अदृश्य नदी	84
कुंभ : आतुरता में स्नान	86
कुंभ : संपूर्ण होने का सुख	88
इस शहर में एक प्याऊ थी	89
सूरज मछुआरा	91
बरसात में किला	92
कविता के लिए थोड़ी-सी जगह	94
कोयला बनता आदमी	96
शहर	98
नदी की स्मृति	100
फोटू बचे रहेंगे	103
तुम नहीं लिख पाते हो प्रेम गीत	104
आँख में हिलगा आँसू	106
पूरा घर कविता	107
एक टुकड़ा बादल	109
उनका क्या हुआ?	111
खेत के बीचों बीच अड़ी टांग	113
इच्छा मृत्यु के विरुद्ध	115
शहर में ट्रेक्टर	117
भारत भवन को देखते हुऐ	119
आकाश बनने के लिये	121
अग्नि संस्कार	122
ऋतु-कृपा	123
दृष्टि-विस्तार	124
आग	125
बसंत : स्मृति प्रस्फुटन	127

Scanned with OKEN Scanner

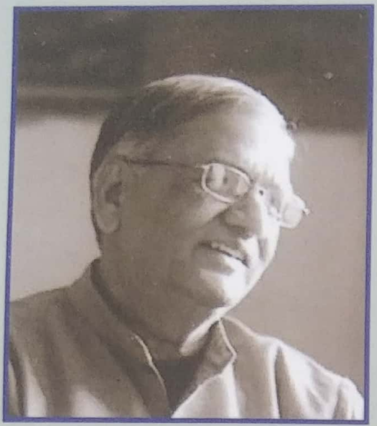

श्यामसुंदर दुबे

श्यामसुंदर दुबे का जन्म 12 दिसंबर, 1944 को बर्तलाई (हटा) दमोह, मध्य प्रदेश में हुआ। उन्होंने एम.ए., पीएच. डी. तक शिक्षा प्राप्त की। उच्च शिक्षा विभाग म.प्र. के विभिन्न महाविद्यालयों में प्रोफेसर रहे। स्नातकोत्तर महाविद्यालय के प्राचार्य पद से उन्होंने स्वैच्छिक सेवा निवृत्ति ली। वर्तमान में मुक्तिबोध सृजनपीठ डॉ. हरीसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय सागर के निदेशक पद पर कार्यरत हैं।

डॉ. दुबे काव्य, ललित निबंध, कथा, समीक्षा तथा लोक केन्द्रित विधाओं में निरंतर लेखन कर रहे हैं। इन विधाओं में अभी तक उनके पचास से अधिक ग्रंथ प्रकाशित हो चुके हैं। 'रीते खेत में बिजूका', 'ऋतुएँ जो आदमी के भीतर हैं', 'इतने करीब से देखो', 'धरती के अनंत चक्करों में' उनके काव्य संकलन हैं। 'काल मृगया', 'विषाद बाँसुरी की टेर', 'कोई खिड़की इसी दीवार से', 'राम रंग रस भींजी चुनरिया' आदि ललित निबंध संकलन; 'दाखिल-खारिज', 'सोन फूला' उपन्यास और 'जड़ों की ओर' कहानी संकलन डॉ. दुबे की कथा-केन्द्रित पुस्तकें हैं। 'संस्कृति, समाज और संवेदना', 'महाकवि सूरदास की लोक दृष्टि', 'कथा साहित्य की लोक संवेदना', 'विहारी सतसई का सांस्कृतिक अध्ययन' आदि समीक्षा कृतियों के साथ 'लोक : पहचान, परंपरा एवं प्रवाह', 'लोक चित्रकला : संवेदना और रचना-दृष्टि', 'लोक : मानवमूल्य और मीडिया', 'लोक में जल' तथा 'लोक का साहित्य : साहित्य का लोक' आदि डॉ. दुबे की लोक केन्द्रित पुस्तकें हैं। 'लोक राम-कथा' डॉ. दुबे की संपादित कृति है।

डॉ. दुबे को उनके रचना-कर्म पर अनेक पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं। केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय का 'सुब्रह्मण्यम भारती' पुरस्कार, म.प्र. साहित्य ऐकेडेमी के बालकृष्ण शर्मा नवीन एवं आचार्य नंददुलारे वाजपेयी पुरस्कार, म.प्र. हिन्दी साहित्य सम्मेलन का 'वागीश्वरी' तथा डॉ. शंभुनाथ सिंह नवगीत पुरस्कार आदि प्रमुख हैं। अब तक डॉ. दुबे के कृतित्व पर छः पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

स्थायी पता—
श्री चंडी जी वार्ड, हटा (दमोह) मध्य प्रदेश-470775
मो. 09425405939

Scanned with OKEN Scanner